साधकों का
मासिक प्रेरणा

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2555, वैशाख पूर्णिमा, 17 मई, 2011 वर्ष 40 अंक 11

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

धम्मं चरे सुचरितं, न नं दुच्चरितं चरे।
धम्मचारी सुखं सेति, अस्मिं लोके परम्हि च॥
– धम्मपद १६९, लोकवग्गो

सुचरित धर्म का आचरण करे, दुराचरण से बचे। धर्मचारी इस लोक और परलोक (दोनों जगह) सुखपूर्वक विहार करता है।

बुद्धशिक्षा का पतन और पुनर्जागरण

१. सांप्रदायिकताविहीन सार्वजनीन बुद्धशिक्षा

२००० वर्ष पहले जब भारत से सम्राट अशोक द्वारा भेजी गयी संबुद्ध की पावन शिक्षा बर्मा पहुँची तब इसका वहां भव्य स्वागत हुआ। तब से लेकर अब तक यह शिक्षा एक परंपरा द्वारा वहां नितांत **शुद्ध रूप** में संभालकर रखी गयी। वहां एक मान्यता यह चली आ रही थी कि बुद्ध शासन के २५०० वर्ष पूरे होने पर, बर्मा ने भारत की जिस पावन बुद्धशिक्षा को शुद्धरूप में संभालकर रखा है, वह बर्मा द्वारा भारत लौटायी जायगी। क्योंकि उस समय तक इस शिक्षा का भारत में नामोनिशान तक नहीं बचा रहेगा।

मेरे परदादा गुरु भिक्षुप्रवर लैडी सयाडो ने देखा और समझा कि अब शीघ्र ही २५०० वर्ष पूरे होने वाले हैं। यह विद्या बर्मा से भारत कौन ले जायगा? उस समय उन्होंने स्वयं भारत की यात्रा की और देखा कि यहां बुद्धानुयायी भिक्षुओं का रंचमात्र भी सम्मान नहीं है। अतः कोई भिक्षु इस महत्त्वपूर्ण कार्य का समुचित संपादन नहीं कर पायेगा। तब उन्होंने निर्णय किया कि यह काम कोई भारतीय मूल का बरमी नागरिक गृहस्थ आचार्य ही कर सकेगा। अतः इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए ऐसा आचार्य तैयार किया जाना चाहिए।

सम्यक संबुद्ध के जीवनकाल में भारत में भिक्षु और भिक्षुणी आचार्य और आचार्याओं के साथ-साथ गृहस्थ पुरुष और नारी भी धर्माचार्य और धर्माचार्याएं होती थीं। परंतु कुछ समय बीतते-बीतते गृहस्थों की यह आचार्य-परंपरा लुप्त हो गयी। अब भारत को सम्यक संबुद्ध की यह पावन विद्या नितांत शुद्धरूप में लौटाने के लिए उन्हें गृहस्थ आचार्य और आचार्या की आवश्यकता महसूस हुई। अतः इतनी सदियों के लंबे अंतराल के बाद उन्होंने पहले अपने एक बरमी किसान **गृहस्थ सयातै जी** को पूर्णतया प्रशिक्षित करके इस परंपरा के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। सयातै जी ने गृहस्थों के साथ-साथ भिक्षुओं को भी विपश्यना साधना सिखायी और इस प्रकार गृहस्थ होते हुए भी अपनी प्रशिक्षण योग्यता सिद्ध की। उनके बाद मेरे परमपूज्य गुरुदेव **सयाजी ऊ बा खिन** आधुनिक युग के **दूसरे गृहस्थ आचार्य** नियुक्त हुए।

सयाजी ऊ बा खिन ने बुद्ध की शिक्षा के सार्वजनीन स्वरूप को उजागर करते हुए एक मुस्लिम प्रोफेसर को, एक प्रसिद्ध क्रिश्चिन पादरी को और सीआईए के एक उच्च अधिकारी को ही नहीं, बल्कि मुझ जैसे एक कट्टर हिंदू सनातनी धर्मावलंबी को भी **बुद्ध का धर्म** सिखाया। इससे यह साबित हुआ कि बुद्ध की शिक्षा किसी एक संप्रदाय तक सीमित नहीं है, बल्कि सार्वजनीन है, सबके कल्याण के लिए है।

जब मैं पहली बार सयाजी ऊ बा खिन से मिला तब मेरे मन में यह झिझक थी कि यह बौद्धों की शिक्षा है, बौद्धों की विद्या है। इसे सीख कर मैं कहीं बौद्ध न बन जाऊं और मेरा स्वधर्म न छूट जाय, मेरा पतन न हो जाय। यह देख कर उन्होंने मुझसे प्रश्न किया कि तुम यहां के हिंदू समाज के नेता हो। क्या तुम्हारे हिंदू समाज में **शील-सदाचार** के पालन का कोई विरोध है? मैंने कहा नहीं, इसका विरोध तो किसी संप्रदाय में भी नहीं है। इस पर उन्होंने दूसरा प्रश्न किया कि क्या तुम्हारे समाज में **समाधि** का अभ्यास करने का कोई विरोध है? मैंने उत्तर दिया नहीं। हमारे ऋषि-मुनियों द्वारा समाधि लगाने के अनेक प्रसंग मिलते हैं। अतः समाधि से मेरा क्या विरोध होगा! तब फिर उन्होंने पूछा कि क्या अपने अंतर की **प्रज्ञा** जगाने में और प्रज्ञावान बनने में कोई विरोध है? **प्रज्ञावान** यानी **'स्थितप्रज्ञ!'** शब्द से तो हमारी गीता भरी पड़ी है। इसमें क्या विरोध होता भला! तब गुरुदेव ने कहा, बस! शील, समाधि और प्रज्ञा इन तीनों को छोड़ कर, कोई चौथी बात न हम सिखाते हैं और न भगवान बुद्ध ने सिखायी। इस वार्तालाप से मेरी समझ में आ गया कि यह विद्या सार्वजनीन है, सब के लिए है। मुझे यह जान कर सुखद आश्चर्य हुआ कि भगवान बुद्ध ने किसी एक व्यक्ति को भी बौद्ध नहीं बनाया। उन्होंने **बौद्धधर्म** नहीं सिखाया, बल्कि सार्वजनीन **धर्म** सिखाया।

गुरुदेव ने कहा कि शील, सदाचार का जीवन जीना सभी संप्रदायों को मान्य है। इनके बारे में चर्चा और प्रवचन तो बहुत होते हैं। परंतु ऐसा जीवन कैसे जीएं, यह कोई नहीं सिखाता। मन को वश में किये बिना कोई कैसे सदाचारी बने? इसीलिए समाधि का अभ्यास कराया जाता है।

समाधि का अभ्यास भी सार्वजनीन आलंबन के आधार पर

ही किया जाता है। महज शुद्ध स्वाभाविक सांस पर ध्यान केंद्रित करना सिखाया जाता है। इसके लिए कोई वर्बलाइजेशन नहीं है, सांस के साथ किसी शब्द का उच्चारण नहीं जोड़ा जाता। **नमो बुद्धाय** या अन्य कोई रट नहीं लगवायी जाती। इसमें न ही कोई विजुएलाइजेशन जोड़ा जाता है, न बुद्धमूर्ति को आलंबन बना कर ध्यान कराया जाता है। ध्यान का आलंबन शुद्ध सांस है जो सब का एक जैसा होता है। इसके साथ किसी आकृति का ध्यान जोड़ दिया जाता तो यह सार्वजनीन नहीं रह पाता, बल्कि सांप्रदायिक बन जाता। उद्देश्य यही है कि चित्त की एकाग्रता का आलंबन सांप्रदायिक नहीं बने, बल्कि सार्वजनीन बना रहे।

आगे चल कर गुरुदेव ने मुझे यह भी समझाया कि केवल मन को वश में कर लेने मात्र से साधना नहीं सिद्ध होती। चित्त की गहराइयों में समायी हुई विकारों की जड़ें जब तक कायम हैं, तब तक उनसे छुटकारा नहीं मिल सकता। ऊपर-ऊपर का मन एकाग्र होकर कुछ अंशों में **शांत** हो जायगा और कुछ सीमा तक **निर्मल** भी, परंतु विकारों की जड़ें भीतर कायम रहने के कारण समय-समय पर जब वे उभर कर ऊपर आती हैं तब यह एकाग्रता काम नहीं आती। इसे सुन कर मेरे मन में अपने ऋषि-मुनियों के उदाहरण उभर कर सामने आये कि कैसे मुनि विश्वामित्र और पाराशर जैसे गूढ़ ध्यानी भी समय आने पर अपने मन का संतुलन खो बैठे और वासना के शिकार हो गये।

गुरुदेव ने कहा कि इसीलिए सम्यक संबुद्ध ने **प्रज्ञा** जगाने की विधि सिखायी। स्वानुभूति के स्तर पर जागी हुई अपनी प्रज्ञा अंतर्मन की जड़ों तक पहुँच कर समस्त संगृहीत विकारों को बींध-बींध कर, उनका छेदन-भेदन करके उन्हें निर्मूल कर देती है। इस प्रकार प्रज्ञा के अभ्यास द्वारा एक-एक करके दबे हुए विकार निकलने लगते हैं और समय पाकर समाप्त हो जाते हैं। उन्होंने फिर समझाया कि प्रज्ञा श्रुतमयी भी होती है यानी केवल सुनी-सुनायी होती है, और आगे बढ़े तो चिंतनमयी प्रज्ञा हो जाती है, परंतु ये दोनों ही सही प्रज्ञा नहीं हैं। स्वानुभति पर भावित हुई प्रज्ञा ही भावनामयी प्रज्ञा है। क्योंकि यह भावनामयी प्रज्ञा ही मानस के भीतर तक संगृहीत विकारों को बींध-बींध कर उनका निष्काशन करती है। इसीलिए पटिवेधन प्रज्ञा कहलाती है। यह प्रज्ञा ही कल्याणकारी प्रज्ञा है। प्रज्ञा प्रत्यक्ष ज्ञान को कहते हैं, परोक्ष ज्ञान को नहीं। किसी से प्रज्ञा की मात्र व्याख्या सुन करके और उसका चिंतन-मनन भी करके, न कोई व्यक्ति स्थितप्रज्ञ हुआ है और न ही भविष्य में कभी हो सकता है। प्रज्ञा परोक्ष ज्ञान नहीं, प्रत्यक्ष ज्ञान है। स्वयं अपनी अनुभूति पर जागे, तभी प्रत्यक्ष ज्ञान, अन्यथा परोक्ष ज्ञान होकर रह जाता है।

२. सार्वजनीन शुद्ध धर्म की महत्ता

सार्वजनीन धर्म किसी एक संप्रदाय का नहीं होता। जो धारण करे वही धार्मिक हो जाता है। वह चाहे जिस संप्रदाय का व्यक्ति हो। परंतु जब कुछ बुद्ध-विरोधी पुरोहितों ने सार्वजनीन धर्म को एक सांप्रदायिक रूप देना आरंभ कर दिया तब उसे धर्म के स्थान पर बौद्धधर्म कहने लगे और उसके अनुयायियों को धार्मिक के बजाय बौद्ध कहने लगे। सम्यक संबुद्ध ने सार्वजनीन धर्म सिखाया। उसके साथ कोई विशेषण (prefix) नहीं जोड़ा, अन्यथा वह संप्रदाय बन ही जाता। उन्होंने कुछ जोड़ा भी तो **"सत्य"** शब्द जोड़ा और अपनी शिक्षा को **सत्यधर्म (सद्धर्म)** कहा। जो विद्या निसर्ग के सार्वजनीन नियमों की सच्चाइयों पर आधारित हो, उसे सद्धर्म कहा जाना उचित ही था। क्योंकि वस्तुतः धर्म कहते हैं प्रकृति के नियम यानी विश्व के विधान को, जो सब पर एक जैसा लागू होता है। अतः धर्म सदा सार्वजनीन, सार्वदेशिक और सार्वकालिक ही होता है। इसीलिए कहा गया-- **एस धम्मो सनन्तनो।** यदि सचमुच धर्म है तो वह सनातन ही होगा। इसके मुकाबले बौद्धधर्म एक संप्रदायसूचक शब्द है जो कि उस संप्रदायविशेष के संबंधित लोगों से जुड़ा रहेगा। वह सार्वजनीन कदापि नहीं हो सकता।

धर्म सबका है इसीलिए हम सदा मनोकामना करते हैं कि --

चिरं तिट्ठतु सद्धम्मो, धम्मो होतु सगारवो!

यानी, *सत्यधर्म (नैसर्गिक सच्चाइयों पर आधारित सद्धर्म) को हम चिरकाल तक स्थित देखना चाहते हैं। इसी में धर्म का गौरव है।*

धर्म माने **सदाचरण**। प्रकृति के नियमों के अनुसार इसके पालन से सुखद परिणाम ही आते हैं। **दुराचरण** सब के लिए दुःखद परिणाम ही लाता है। प्रकृति के इस सार्वजनीन नियम को सभी लोग स्वीकारते हैं। ऐसे **सार्वजनीन धर्म** का पालन करने वाला व्यक्ति **धार्मिक** ही होता है। इसीलिए **धर्म** सबका है। उस पर किसी एक संप्रदाय की मोनोपोली नहीं होती। परंतु धर्म को यदि **बौद्धधर्म** कहें तो वह सार्वजनीन न होकर एक समुदायविशेष तक सीमित हो जाता है। हर संप्रदाय के अपने-अपने अलग-अलग कर्मकांड, अलग-अलग दार्शनिक मान्यताएं, अलग-अलग अंधविश्वास होते हैं। कोई भी सांप्रदायिक धर्म सार्वजनीन कदापि नहीं हो सकता। अन्य समुदाय वाले उसे कैसे अपनायेंगे? इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए बुद्ध की शिक्षा को **धर्म** ही कहें, **बौद्धधर्म** नहीं। बुद्ध की शिक्षा को सदैव सार्वजनीन ही बनी रहने दें। बौद्ध जैसे दूषित शब्द जोड़ कर उसे दूषित न बनने दे। यह कैसे कर सकेंगे, इस पर सभी विद्वानों को विचार-विमर्श करना चाहिए।

सम्यक संबुद्ध के संबोधि प्राप्त करने के बाद जो पहला उपदेश दिया वह धर्मचक्र प्रवर्तन कहलाया और वह शील, समाधि, प्रज्ञा के आर्य अष्टांगिक मार्ग के सार्वजनीन शुद्ध धर्म के रूप में उजागर हुआ और यह सम्राट अशोक के साम्राज्य तक यानी लगभग ३ सौ वर्षों तक सार्वजनीन धर्म के रूप में ही भारत भर में फैला। इससे संप्रदायवादियों को गहरी चोटें लगीं।

बुद्ध के जीवनकाल के पश्चात जब **अशोक** ने विपश्यना का अभ्यास करके स्वानुभूति द्वारा शील, समाधि और प्रज्ञा के धर्म को अपनाया तब वह कल्याण की भावना से प्रेरित होकर अपने सारे साम्राज्य में धर्म ही फैलाया, बौद्धधर्म नहीं।

इस पुरातन पावन परंपरा का **तीसरा गृहस्थ आचार्य** नियुक्त करके जब मुझे म्यंमा से भारत भेजा गया तब इगतपुरी में विपश्यना साधना का जो पहला केंद्र स्थापित हुआ और उसके कुछ समय बाद **विपश्यना विशोधन विन्यास** का भी निर्माण किया गया। इसी संस्था के अनुसंधान द्वारा हमने देखा कि बुद्धवाणी मात्र में ही नहीं, बल्कि समग्र पालि साहित्य में **धम्म** और **धम्म** से जुड़े हुए शब्दों की कुल **संख्या १७०७३** है। हमने यह भी देखा कि उनमें से किसी में भी **बौद्ध** शब्द नहीं जुड़ा हुआ है। अतः स्पष्ट है कि भगवान बुद्ध ने कभी **बौद्धधर्म** नहीं सिखाया। उन्होंने किसी

एक को भी **बौद्ध** नहीं बनाया। अन्यथा उनकी शिक्षा सार्वजनीन कैसे बनी रहती? यदि इसे वे बौद्धधर्म कह देते तब यह भी अन्यों की भांति एक संप्रदाय बन कर रह जाती। यदि ऐसा होता तो सम्यक संबुद्ध भी एक संप्रदाय के संस्थापक कहलाते। परंतु उन्होंने बौद्धधर्म न सिखा कर धर्म सिखाया, जो सब का होता है। उन्होंने अपने अनुयायियों को **बौद्ध** न बना कर **धार्मिक** बनाया। उन्हें **धम्मट्ठो, धम्मविहारी, धम्मानुसारी** आदि शब्दों से संबोधित किया। धर्म सबका होता है। धार्मिक सभी बन सकते हैं। इसीलिए बुद्ध की शिक्षा सांप्रदायिक नहीं, सार्वजनीन है।

बुद्ध की मूल शिक्षा को **बौद्धधर्म** और उसके अनुयाइयों को **बौद्ध** कह कर उसका अवमूल्यन कदापि नहीं होने दिया जाना चाहिए। संबुद्ध ने शील, समाधि और प्रज्ञा के जिस आर्यमार्ग की विपश्यना साधना का प्रशिक्षण दिया, उसे उन दिनों के सारे भारत के लगभग सभी संप्रदायों ने स्वीकार किया। किसी ने कोई विरोध नहीं किया।

बुद्ध के लगभग १८० वर्ष बाद जब अशोक मौर्य सम्राट बना और बुद्ध की शील, समाधि, प्रज्ञा की सार्वजनीन शिक्षा के मार्ग पर स्वयं आरूढ़ हुआ, तब अपनी प्रजा के प्रति मंगल भावना से प्रेरित होकर अपने सारे साम्राज्य में इसका प्रसार किया। हम देखते हैं कि उसने कहीं भी **धर्म** के स्थान पर **बौद्धधर्म** का प्रयोग नहीं किया। इसी प्रकार जिन पड़ोसी देशों में बुद्ध की सार्वजनीन शिक्षा भेजी, वहां के लोग भी संकुचित संप्रदायवाद से मुक्त होकर शुद्ध धर्मालंबी ही हुए। सार्वजनीन होने के कारण बुद्ध की शिक्षा का किसी ने भी विरोध नहीं किया। और न ही इस परंपरा के किसी एक व्यक्ति को भी **बौद्ध** बनाया गया।

बुद्ध के २५०० वर्ष बीतने के पश्चात उनकी सार्वजनीन सही शिक्षा पुनः भारत आयी और सारे विश्व के अनेक देशों में फैल रही है। विश्व के ९० देशों के, सभी संप्रदायों के अनेक लोग, इसे बिना झिझक स्वीकार कर रहे हैं। इसका कहीं कोई विरोध नहीं होता। ऐसी अवस्था में कोई श्रद्धालु अनुयायी **धर्म** शब्द की जगह **बौद्धधर्म** कहने की धृष्टता कैसे करेगा? इसे **बुद्धिस्ट शिक्षा** न कह कर **बुद्ध की शिक्षा** कहना अधिक सही और उपयुक्त होगा।

बुद्ध के संबोधि प्राप्ति के समय से लेकर आगामी लगभग २७० वर्षों तक उनकी शिक्षा सार्वजनीन ही बनी रही। कभी संप्रदायवादी नहीं बनी। बुद्ध के समय भारत में लगभग ६२ प्रकार के संप्रदाय थे। उनमें से इक्के-दुक्के संप्रदायों को छोड़ कर शेष सारे संप्रदायवादी उनके सार्वजनीन धर्म में समाहित हो गये। यह उनकी शिक्षा के सार्वजनीन स्वरूप का ही प्रकट परिणाम था। परंतु इस सार्वजनीन शिक्षा से पुरोहित वर्ग को सबसे अधिक चोट लगी क्योंकि यह उनकी रोजी-रोटी से सीधे संबंधित थी। अतः इन आहत पुरोहितों ने सम्राट अशोक के बाद उसकी तीसरी पीढ़ी के सम्राट बृहदरथ के समय बुद्ध की शिक्षा को नष्ट करने का षडयंत्र शुरू किया। हम इसे शुद्ध रूप में बचाये रखें, इसी में सब का मंगल समाया हुआ है।

मंगल मित्र,

सत्यनारायण गोयन्का

क्रमशः.....

मंगल मृत्यु

❶ मुंबई के **श्री अशोक गिरनीकर** गत २६ फरवरी, २०११ को दिवंगत हुए। वे ६८ वर्ष के थे और विपश्यना का पहला शिविर १९८५ में किया था। सरकारी सेवा में रहते हुए उन्होंने विपश्यना के अनेक शिविर किये। १९९७ में विपश्यना के सहायक आचार्य नियुक्त हुए और उनकी लगन व सेवाओं को देखते हुए २००७ में उन्हें पूर्ण आचार्य बनाया गया। अपनी पत्नी श्रीमती वैशाली के साथ मिल कर सेवा करते हुए अनेक शिविरों का संचालन किया और धम्मपत्तन के निर्माण व संचालन में भी सेवाएं दी। दुर्भाग्य से एक विशेष प्रकार की बीमारी के शिकार हुए और उससे उबर न सके। बीमारी के दौरान मई २०१० में अपनी पत्नी के साथ धम्मगिरि के १०-दिवसीय शिविर में सम्मिलित होकर लाभान्वित हुए। मुंबई की अस्पताल में समतापूर्वक अंतिम सांस ली। दिवंगत का मंगल हो!

---

❷ **श्री रामअवध वर्मा** म्यंमा से बेतुल (म.प्र.) के एक गांव में विस्थापित हुए थे। जन्म और शिक्षण म्यंमा में ही हुआ। बैतुल में किसानी का काम करते हुए वहीं पर एक सरकारी स्कूल के अध्यापक नियुक्त हुए थे। चूंकि उनकी शिक्षा बर्मा में हुई थी, वे बरमी भाषा पर बहुत अच्छा अधिकार रखते थे। उनकी हिंदी की शिक्षा हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के माध्यम से पूज्य गुरुदेव श्री गोयन्काजी के सहयोग से ही हुई थी। श्री गोयन्काजी का बहुत उपकार था उन पर। जब धम्मगिरि में **विपश्यना विशोधन विन्यास** की स्थापना हुई तब पूज्य गुरुदेव ने उन्हें यहां बरमी पुस्तकों पर अनुसंधान और अनुवाद के लिए आमंत्रित किया। कृतज्ञ श्री वर्माजी उनके आह्वान पर १९९५ में अपनी सरकारी सेवा त्याग कर, धम्मगिरि आये और बरमी पुस्तकों के हिंदी अनुवाद की सेवा में लग गये। इस क्षेत्र में उनका सहयोग सदा स्मरणीय रहेगा।

इसके पूर्व ८० के दशक में उन्होंने विपश्यना का पहला शिविर किया और समय पाकर सहायक आचार्य नियुक्त हुए। विपश्यना केंद्रों के अतिरिक्त गांवों में भी अनेक शिविरों का संचालन करके सगे-संबंधियों सहित अनेकों को धर्मलाभ ले सकने में सहायक हुए। गंभीरतापूर्व अपनी साधना करते हुए साधना की ऊंचाइयां भी प्राप्त की।

पिछले दिनों बर्मा में शिविर संचालन हेतु धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला के साथ म्यंमा गये। वहां शिविर संचालन करके अपने पैतृक स्थान दक्षिण म्यंमा से मांडले (मध्य म्यंमा) की यात्रा करते हुए बीमार हो गये। अस्पताल में भरती हुए परंतु अंततः १ अप्रेल को वहीं अपना शरीर छोड़ दिया। अंतिम समय में समता बनी रही और वहां के स्थानीय साधकों ने उनकी खूब सेवा की और सहयोग दिया। दिवंगत का प्रभूत मंगल हो!

भाइंदर रेल्वे स्टेशन (प.) से पगोडा की बस-सेवा

प्रतिदिन प्रातः ६:४० से सायं ८:३५ तक निम्न समयों पर **प्रतिदिन** सीधे पगोडा जाने और वापस लौटने केलिए सार्वजनिक नगरीय बस-सुविधा उपलब्ध है। **भाइंदर रेल्वे स्टे.** (प.) से **बस** छूटने का **समय--** ६:४०, ७:२०, ८:१०, ८:४०, ९:४०, १०:३५, ११:३०, १२:२५, १३:५०, १४:४५, १५:४०, १६:३५, १७:३०, १८:३०,१९:३५. **ग्लोबल विपश्यना पगोडा** से **बस** छूटने का **समय--** ७:२५, ८:००, ८:५५, ९:३५, १०:३५, ११:३०, १२:२५, १३:२०, १४:४५, १५:४०, १६:३५, १७:३०, १८:३५, १९:३५, २०:३५.

सहायक आचार्य कार्यशाला (दक्षिण भारत)

आगामी २८ जून सायं ५ बजे से ३ जुलाई दोपहर १ बजे तक, **धम्म पफुल्ल** विपश्यना केंद्र, **बैंगलोर** में सहायक आचार्यों की कार्यशाला आयोजित की गयी है। इसका संचालन मुख्यतः **अंग्रेजी** में होगा परंतु **तमिल** और **तेलुगू** में भी ट्रेनिंग देने की सुविधा उपलब्ध रहेगी। बुकिंग व अन्य जानकारी के लिए **संपर्क--** श्रीमती अर्चना एवं उदय शेखर, फोन- ०९८४५०७४४४८, ०८०-२६७११५३२, ईमेल-- from.archana@gmail.com

Registered No. NSK/46/2009-2011

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011

गुरुपूर्णिमा के उपलक्ष्य और पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में एक दिवसीय शिविर

१७ जुलाई, २०११, **रविवार**, **समयः** प्रातः ११ बजे से अपराह्न ४ बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** के बड़े धम्मकक्ष (डोम) में हजारों साधकों और **पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य** में **एक दिवसीय** शिविर का आप भी लाभ उठाएं। कृपया ध्यान दें कि इस विशाल शिविर की व्यवस्था सुचारुरूप से हो और आपको किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसलिए **बिना बुकिंग कराये न आएं। बुकिंग संपर्क: मो. 09892855945, 09892855945, फोन नं.: 022-28451170, 33747543, 33747544**, (**फोन बुकिंग समय :** प्रातः ११ से सायं ५ तक, प्रतिदिन)

ईमेल Registration: oneday@globalpagoda.org;
Online Registration: www.vridhamma.org

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

१. श्री जीतेंद्रकुमार ठक्कर, बनासकांठा, धर्मप्रसार की सेवा

वरिष्ठ सहाय आचार्य

१. डॉ. (कु.) इंदुमती मोढा, जामनगर
२. श्रीमती मंजुला जोशी, अहमदाबाद
3. Mr. Eric Lataste, *France*
4. Mr. Virak Chan, *France*
5. & 6. Mr. Kostas Lempidakis & Mrs. Claudia Hackfort, *Greece*
7. Mr. Sigitas Baltramaitis, *Lithuania*
8. Ms. Clara Jiménez Xiberta, *Spain*
9. Mrs. Snehlata Jain, *UK*

नव नियुक्तियां

बालशिविर शिक्षक

१. श्रीमती जोगेश्वरी छाया, कच्छ
२. श्री अनिल जरीवाला
३. श्री महेंद्रकुमार मैसूरिया, सूरत
४. श्रीमती उर्वशी मकवाना, सूरत
५. श्रीमती गीता पाल, हरियाणा
६. श्रीमती ज्योतिबेन पारिख, सूरत
७. श्री कीर्तिकुमार परमार, सूरत
८. श्री गिरिधरभाई पटेल, सूरत
९. श्रीमती पिनुल शाह, सूरत
१०. श्री राकेश त्रिवेदी, सूरत
११. श्रीमती रागिनी जैन, मोडासा
१२. कु. प्रेम गर्ग, पंचकुला
13. Mrs. Nipapone Jangkratoke, *Thailand*, 14. Ms. Chaisri Promchuey, *Thailand*
15. Mr. Boris Paul, *Germany*

दोहे धर्म के

सद्गुरु की करुणा जगी, दिया धर्म का सार।
संप्रदाय के बोझ का, उतरा सिर से भार॥

बँधे जाति से वर्ण से, तो हो धर्म मलीन।
संप्रदाय से जब बँधे, होय धर्मबल क्षीण॥

जात-पांत के फेर में, छुटा धरम का सार।
सार छुटा निस्सार ही, बना शीश का भार॥

देख बिचारे धर्म की, कैसी दुर्गति होय।
लड़ें धरम के नाम पर, पाप प्रफुल्लित होय॥

धर्मगंग से ही धुलें, संप्रदाय के लेप।
उखड़े कल्पित मान्यता, चित्त होय निर्लेप॥

शुद्ध धर्म से टूटती, संप्रदाय दीवार।
जो धारे उसके लिए, खुलें मुक्ति के द्वार॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भुवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

धरम न हिंदू बौद्ध है, सिक्ख न मुसलिम जैन।
धरम चित्त री सुद्धता, धरम सांति सुख चैन॥

पाली संस्क्रित हीबरू, अरबी बोले कोय।
भासा होवै भिन्न पर, भाव धरम रो होय॥

जात वरण रो, गोत रो, जठै भेद ना होय।
जो सैं को मंगळ करै, धरम सांचलो सोय॥

रंग गाय रो भिन्न है, दूध भिन्न ना होय।
संप्रदाय होवै जुदा, धरम जुदा ना होय॥

संप्रदाय तो मोकळा, धरम सदा ही एक।
नद नाळा तो अणगिणत, समदर जळरस एक॥

जो कल थो बो आज है, बो ही होसी काल।
साँच धरम तो एक है, फरक न तीनूं काळ॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष** 2555, **वैशाख पूर्णिमा, 17 मई, 2011**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/46/2009-2011**

Licenced to post **without Prepayment of postage** -- WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org

.....

धम्म पत्तन विपश्यना केंद्र, गोराई (मुंबई)

Booking for Vipassana courses: **Dhamma Pattana Vipassana Centre,** Gorai, Borivali (W), Mumbai–400091.
Mob.: 09773069975, Tel.: (022) 28452238 Fax.: 022-33747531;
Online application-- Email: registration_pattana@dhamma.net.in;
For other information: Email: info@pattana.dhamma.org

सहायक आचार्य कार्यशालाएं

मध्य क्षेत्र के सभी सहायक आचार्यों से निवेदन है कि १५ से १८ अगस्त तक होने वाली धम्म गिरि, इगतपुरी की सहायक आचार्य कार्यशाला में भाग लेकर इसका लाभ उठाएं। कृपया ध्यान दें कि यह कार्यशाला १५ की प्रातःकाल आरंभ हो जायगी। अतः सभी अभ्यार्थी १४ की रात तक धम्मगिरि पहुँच जायँ। बुकिंग आदि के लिए **संपर्क**-- व्यवस्थापक, **धम्मगिरि, इगतपुरी**. ....

इसी प्रकार जयपुर में सहायक आचार्य कार्यशाला २ से ६ दिसंबर तक होगी। कार्यशाला २ की सायं आरंभ होगी।
संपर्क-- धम्म थली, विपश्यना केंद्र, जयपुर ...